www. kalyancollege.org

ISSN-0972-9909

छत्तीसगढ़-विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य
एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

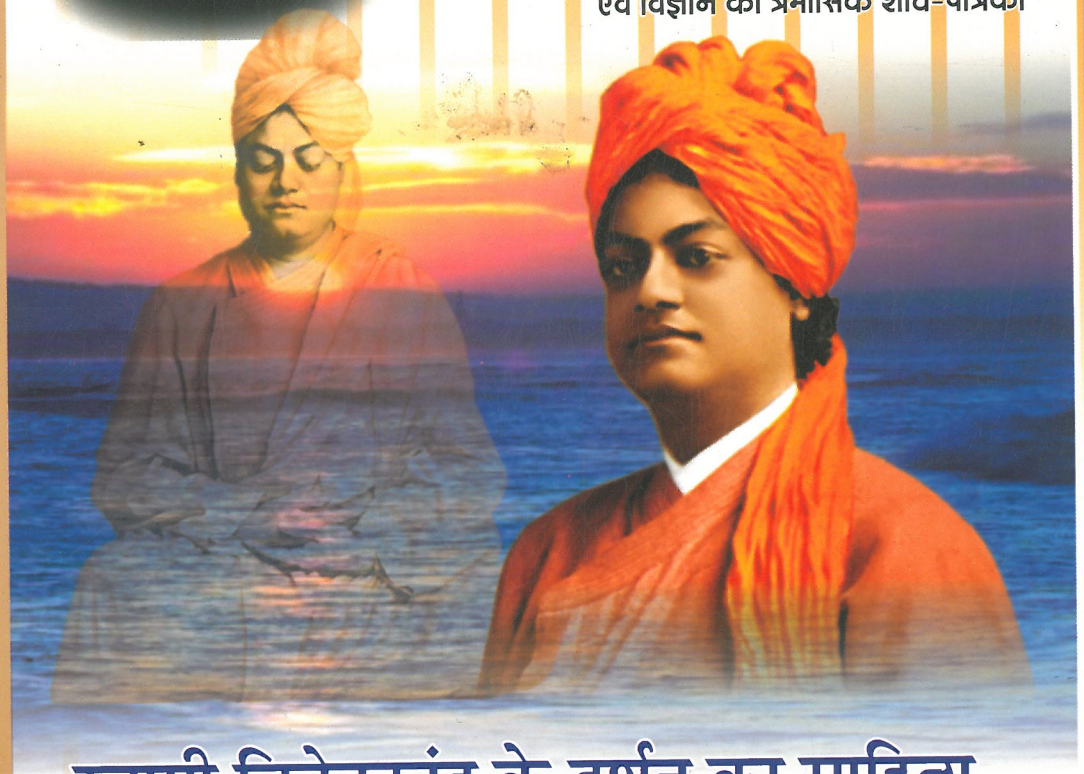

स्वामी विवेकानंद के दर्शन का साहित्य, शिक्षा, समाज और संस्कृति पर प्रभाव

राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी

दिनांक : 11 एवं 12 जनवरी, 2016

सेमीनार विशेषांक

प्रायोजक
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

आयोजक
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

ISSN-0972-9909

छत्तीसगढ़ विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक-53, वर्ष -15, अप्रैल-जून, 2016

अनुक्रम

1. स्वामी विवेकानन्द का दर्शन : वाई. राधिका 6
2. "स्वामी विवेकानंद और युवा वर्ग" : अर्चना आनंद (श्रीमती मेधा तिवारी) 9
3. स्वामी विवेकानन्द का दर्शन : डॉ. संध्या श्रीवास्तव 11
4. स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन : डा. सुमन सिंह बालियान 18
5. स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन (1863–1902) : अर्चना गोमास्ता 21
6. स्वामी विवेकानंद का सहिष्णु भारत : डॉ. फिरोज़ा जाफ़र अली 24
7. धर्म का आधार – सबसे सशक्त : डॉ. जया ठाकुर 27
8. स्वामी विवेकानन्द जी का समाजिक दर्शन : डॉ. मालती तिवारी 29
9. स्वामी विवेकानंद और धर्म : श्रीमती बर्नाली राय 34
10. स्वामी विवेकानन्द और धर्म : प्रो. प्रीति मिश्रा, डॉ. रीता पाण्डेय 36
11. स्वामी विवेकानंद : दिव्य व्यक्तित्व और प्रेरणास्पद कृतित्व : डॉ. रेशमा अंसारी, कमलेश गोगिया 38
12. स्वामी विवेकानंद का भारत में शैक्षिक योगदान : डा. शोभा पुरकर, श्रीमती शैलजा पवार 42
13. स्वामी विवेकानंद का चिंतन : डॉ. रोशनी मिश्रा 44
14 .स्वामी विवेकानन्द का वेदान्त-विज्ञान : डॉ. पूर्णिमा केलकर 46
15. स्वामी विवेकानंद और धर्म : डॉ. सुमिता सिंह, डॉ. (श्रीमती) संगीता श्रीवास्तव 48
16. स्वामी विवेकानंद का स्त्री चिंतन : डॉ. (श्रीमती) पुष्पा शर्मा, डॉ. पदमा अग्रवाल 50
17. "आधुनिक भारत निर्माण के महान शिल्पी स्वामी विवेकानन्द": डॉ. ए.एन.शर्मा, श्रीमती सुचित्रा शर्मा 52
18. धर्म और सांप्रदायिकता का वर्तमान संदर्भ : डॉ. देवमाईत मिंज 54
19. प्राचीन भारतीय वर्ण व्यवस्था और स्वामी विवेकानन्द का समाज–दर्शन : मकसूद अहमद 57
20. स्वामी विवेकानंद एवं युवा : श्रीमती ज्योति पुरोहित 60
21. स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन : डॉ. लतिका रिब्रस्ट्रियान 63
22. वेदांत और स्वामी विवेकानंद का प्रगतिशील दृष्टिकोण : कन्हैया कुमार पाण्डेय 65
23. "स्वामी विवेकानन्दजी के भारतीय नारी संबंधी मौलिक विचार : श्रीमती भावना ठाकुर 67
24 स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का राष्ट्र पर प्रभाव : श्रीमती नीरज चौबे 70
25. विवेकानंद के चिंतन के आलोक में शिक्षा : डॉ. रामा यादव 75
26. स्वामी विवेकानंद का स्त्री चिंतन : श्रीमती बबली रीना साहू 77
27. स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन : रणजीत कुमार सिन्हा 80
28. स्वामी विवेकानंद के दर्शन का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव : पिंकी कुमारी बागमार 83
29. स्वामी विवेकानंद के द्वारा चरित्र–गठन के लिए शिक्षा : डॉ. श्रीमती सुमित्रा मौर्या, पूनम पटेल 87
30.स्वामी विवेकानंद और युवा जागरण : श्रीमती डॉ. शीला शर्मा, धनज्योति तिवारी 89

ISSN-0972-9909

"आधुनिक भारत निर्माण के महान शिल्पी स्वामी विवेकानन्द"

डॉ. ए.एन.शर्मा
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शा.महा. वैशालीनगर, भिलाई

श्रीमती सुचित्रा शर्मा
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शा.व्ही.वाय.टी. स्वशासी स्नातकोत्तर महा. दुर्ग

आधुनिक भारत के निर्माण में विवेकानन्द के विचार प्रासंगिक है। विचार के कोई भी आयाम चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो, मनावैज्ञानिक हो, दार्शनिक हो, वैज्ञानिक हो, वाणिज्यिक हो या तकनीकी – सभी पहलुओं पर खरे प्रमाणित हो रहे है। इसलिए उन्हे महान शिल्पी कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। विवेकानन्द का भारत के प्रति अतुलनीय प्रेम इसकी आध्यामित्क उपलब्धियां थी। उनकी दृष्टि में भारत केवल एक भौगोलिक सत्ता मात्र नहीं अपितु वह आध्यत्मिक अनुभूतियों का जीवन प्रतीक था जिसे भारत के ऋषि मुनियों ने अपनी कठिन साधना और तपस्या के आधार पर खड़ा किया था और देश हमारा विश्वगुरू के नाम से प्रसिद्ध था।

वैश्वीकारण के दौर में जहां आज पूरी दुनिया भौतिकता के चकाचौध में अपने आप को भूल चुकी है। मोबाइल जैसे यंत्र एवं इन्टरनेट जैसी सुविधा ने पूरी दुनियों को एक गॉव के रूप में बदल दिया है वही वह अपने पड़ोसी से प्रत्यक्ष सम्पर्क नही कर पा रहा है। मानव स्वयं को एक यंत्र के रूप में पा रहा है। इस संदर्भ मे विवेकानन्द के विचार हमे स्वयं एवं समाज को समझने के लिए प्रेरित करते है, क्योंकि उनके विचार न केवल शाश्वत है बल्कि प्रासंगिक भी है। वर्तमान परिदृष्य मे विवेकानन्द के विचारों की प्रासांगिकता को निम्न बिन्दुओं के संदर्भ में रेखांकित किया जा सकता है।

समाज सुधार के प्रति जागरूकता –

विवेकानन्द महान समाज सुधारक थे। वे उन बिन्दुओं को गहराई तक समझते थे जो भारतीय सामाजिक व्यवस्था को खंडित कर रही थी। वे स्त्रियों की स्थिति को उठाना, सभी वर्गों को शिक्षा से जोड़ना, जाति प्रथा को समाप्त करना, नवीन तकनीकी आविष्कारों हेतु सुविधाओं को उपलब्ध कराना इत्यादि चाहते थे। इनकी सुधारात्मक पद्धति अन्य समाज सुधारको से भिन्न थी। वे बुराई का उन्मूलन शिक्षा से चाहते थे "शक्ति" से नही, उनकी पद्धति रचनात्मक थी, ध्वंसात्मक नहीं वे प्रेम चाहते थे, संघर्ष नही। वे आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक, विचारधारा के समर्थक थे, रूढ़िवादी नहीं। स्वामी जी के हदय में एक आँधी थी, उनकी आत्मा में एक आग थी वह भारत को जगाना और उपर उठाना चाहते थे। समाजशास्त्री हरबर्ट स्पैन्सर की तरह समाज के संबंध में विवेकानन्द की भावना सावयवी थी। उनके अनुसार अनेक व्यक्तियों का समूह समष्टि कहलाता है और अकेला व्यक्ति उसका एक भाग होता है। व्यक्ति की भॉति समष्टि का भी अपना आंगिक जीवन है, उसके विशालकाय शरीर में अनेकों मस्तिष्क व आत्मा है। सामाजिक प्रगति तभी सम्भव है जब उसके घटक कुछ बलिदान करें क्योंकि त्याग व बलिदान किये बिना समष्टि के कल्याण की कामना करना व्यर्थ है। वे सामाजिक संगठन और सामाजिक मामलों में धर्म को सम्मिलित करने के विरूद्ध थे और इसी कारण वे जांतपांत, सम्प्रदायवाद और छुआछूत जैसी सब तरह की विषमताओं के विरूद्ध थे। अस्पृश्यता और कुरीतियों के निवारण हेतु उन्होंने कुछ विचार राखे निम्न है –

1. प्रगति के लिए आचरण पर विशेष महत्व दिया। 2. आत्मविश्वास को विशेष महत्व दिया। 3. अधिकारों की अपेक्षा अपने कर्त्तव्य को महत्व दिया। 4. सत्य के समर्थक और पुजारी थे। 5. मधुर वाणी एवं प्रेम व्यवहार के समर्थक थे।

इसके पूर्व में जहाँ भी कट्टरता एवं रूढ़िवादिता के आधार पर समाज सुधार के प्रयास किये गये, वहाँ असफलता मिली। स्वतन्त्रता की स्थापना के लिए उस युद्ध से बड़ी किसी उथल पुथल की आशा नहीं की जा सकती जो अमेरीका में दास उन्मूलन के लिए हुआ था। स्वामी जी ने समाज सुधार हेतु जिस सिंह गर्जना से अपनी मान्यताओं को प्रस्तुत किया उससे भारत के स्वाभिमानी होने और विश्व को कुछ दे पाने की समर्थ रखने वाले देशों के रूप में रेखांकित हुआ। सुभाष चन्द्रबोस जैसे संघर्ष शील राजनीतिक भी उनके विचारों के सामने नमस्तक थे। विश्व मंच पर विवेकानन्द के अभ्युदय होने से भारतीय जीवन में आशा और विश्वास

की एक ऐसी ज्योति, प्रज्जवलित हुई, जिसमें उसे बंधनों से मुक्त करने की शुरूआत की नींव डाली। भारत को किसी धर्म की आवश्यकता नहीं बल्कि धर्म की शिक्षा देने में पूर्ण सामर्थ्यवान भारत पूरे विश्व में धर्म गुरू की पदवी पा चुका है।

राष्ट्रवादी भावना का विकास –

स्वामी विवेकानन्द आत्मदृष्टा ऋषि होते हुए भी राष्ट्रदृष्टा युगनायक थे, जिनकी प्रखर दृष्टि भविष्य के अन्धकार को भेदने में समर्थ थी। जब विश्व के अन्य राष्ट्र और देश के ही शिक्षित कहे जाने वाले कई लोग भारत को पिछड़ा और राष्ट्रीयता विहिन देश मानते थे, तब स्वामी जी ऐसे प्रथम प्रवक्ताओं में से थे, जिन्होंने भारत को एक संपन्न राष्ट्र के रूप में देखा। उन्होंने देश की राष्ट्रीयता का आधार धर्मो में देखा। उनके लिए धर्म सम्प्रदाय का पर्याय नहीं था किन्तु वह एक दिव्यता थी इसलिए वे कहा करते थे "Religion of the Manitetation of divinity already in man" (मनुष्य में जो दिव्यता पहले से निहित है, उसी की अभिव्यक्ति धर्म है) और धर्म ही उनकी दृष्टि में भारत–राष्ट्र–प्राण केन्द्र था। विवेकानन्द के लिए भारत से बढ़कर पूज्य और पक्त्रि अन्य कुछ भी नही था। जब वे अमरीका से भारत लौटे तब किसी ने उनसे प्रश्न किया कि अब भारत कैसा लग रहा है इस पर विवेकानन्द का उत्तर था –

"विदेश जाने से पहले मै अपने इस देश को प्यार करता था पर अब तो उसकी धूल तक मेरे लिए पवित्र हो गई है। और ऐसा कहकर देश के माटी की चुटकी ली और माथे पर तिलक किया।" यह है स्वामी जी की राष्ट्रवादी भावना।

एक प्रंसग मे स्वामी जी ने कहा है "भौतिक सभ्यता नहीं भोग विलास की भी जरूरत होती है, क्योंकि गरीबों को काम मिलता है। अन्न, अन्न, अन्न चाहिए। मुझे तो यह विश्वास नही होता कि जो भगवान मुझे यहां पर अन्न नही दे सकता, वह स्वर्ग में मुझे अनन्त प्यार देगा। राम कहो। भारत को उठाना होगा, गरीबों को दो रोटी देनी होगी, शिक्षा का विस्तार करना होगा और पुरोहिती बुराइयों को ऐसा धक्का देना होगा कि वे चक्कर खाते हुए एकदम अटलांटिक महासागर में जा गिरे। ब्राम्हण हो या सन्यासी किसी की बुराई को क्षमा नही मिलनी चाहिए। ऐसा करना होगा जिससे पुरोहितों की बुराइयों और सामाजिक अत्याचारों का कहीं नाम निशान तक न रहे, सबके लिए अन्न अधिक सुलभ हो जाय और सबको अधिकाधिक सुविधा मिलती रहे।

"स्वाधीनता पाने का अधिकार उसे नहीं जो औरों को स्वाधीनता देने की तैयार न हो" स्वामी विवेकानन्द ने गरीबी देखी, इस गरीबी को दूर करने के लिए उन्होंने इस देश के लिए बहुत अधिक कष्ट उठाये।"

इस तरह विश्व के सम्मुख भारतीय चित्र को साहसी रूप से प्रस्तुत करने का कार्य स्वामी विवेकानन्द ने सम्पन्न किया। उनके प्रयत्नों की स्पष्ट छाप राष्ट्रीय जीवन पर पड़ी। नवयुवकों ने उनके ओजस्वी साहित्य पढ़े। राष्ट्रीय जीवन को दासता से मुक्त कराने के लिऐ अपूर्व साहस लेकर बंगाल का नवयुवक देश के नवयुवकों का नेतृत्व करने के लिए आगे आया। उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय समाज में जहां तक तरफ धर्म के गीत गाये वहाँ उसे व्यवहारिक रूप से साहस का प्रतीक बताया। समाज में निर्भयता का वातावरण भर गया। भारतीय राष्ट्रवाद को धर्म से सम्बद्ध करके उन्होंने राष्ट्रवाद और धर्म दोनों की जड़ों को मजबूत किया। सच्चे वेदान्ती के नाते वह राष्ट्रीयता और अन्तराष्ट्रीयता के प्रतिनिधि बन गये। समाज को उन्होंने अपने गुरू की स्मृति में रामकृष्ण मिशन अर्पित किया। वह मिशन वेदान्ती आदर्शो के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों की पूर्ति भी करता है। उनमें आधुनिक भारत के निर्माण की जिज्ञासा थी, जिसके लिऐ उन्होंने निर्माण किया और वह उसके प्रतीक भी बन गये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. मुखर्जी, हीरेन्द्र नाथ – इण्डिया स्ट्रगुलफर फ्रीडम
2. फरारबूहर, जे0एन0 – मोर्डन रिलीजियस मूमेंट इन इण्डिया
3. ए0आर0देसाई – भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि
4. मजूमदार, सत्येन्द्र नाथ – विवेकानन्द चरित
5. रोम्यां रोला – विवेकानन्द अनु0 अज्ञेय सहाय
6. विवेकानन्द साहित्य – द्वितीय खण्ड
7. विवेकानन्द साहित्य – तृतीय खण्ड
8. श्री अरविन्द – भारतीय संस्कृति के आधार
9. श्री अरविन्द – मानव एकता का आदर्श